भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग

राज्य सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 2274

दिनांक 07/08/2026

उत्तर प्रदेश में आईसीएआर द्वारा समर्थित अनुसंधान एवं नवाचार परियोजनाएँ

2274 श्रीमती संगीता यादव :

क्या **कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) विगत तीन वर्षों के दौरान उत्तर प्रदेश में, विशेषकर गोरखपुर तथा देवीपाटन मंडलों में, कृषि विज्ञान केंद्रों (केवीके) के माध्यम से भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) द्वारा समर्थित अनुसंधान और नवाचार परियोजनाओं का जिला-वार ब्यौरा क्या है;

(ख) स्थानीय कृषि-जलवायु परिस्थितियों के अनुरूप सत्यापित और बड़े पैमाने पर अपनाई गई प्रौद्योगिकियों का ब्यौरा क्या है;

(ग) इन परियोजनाओं का कृषि उत्पादकता, जलवायु अनुकूलन और कृषि विविधीकरण पर क्या प्रभाव पड़ा है;

(घ) क्या गोरखपुर और देवीपाटन मंडलों/क्षेत्र में बाढ़ एवं सूखा-रोधक्षम कृषि के संबंध में क्षेत्र-विशिष्ट अनुसंधान किया गया है, यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं; और

(ङ) उक्त मंडलों के लिए वित्तीय सहायता और संस्थागत सुदृढ़ीकरण सहित भावी रूपरेखा का ब्यौरा क्या है?

उत्तर

कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री
(श्री भागीरथ चौधरी)

(क) : भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) अपने संस्थानों, राज्य कृषि विश्वविद्यालयों तथा कृषि विज्ञान केंद्रों आदि के माध्यम से कृषि अनुसंधान, प्रौद्योगिकी विकास एवं विस्तार गतिविधियां संचालित करता है। उत्तर प्रदेश के गोरखपुर और देवीपाटन मंडल में किसानों के बीच उन्नत कृषि प्रौद्योगिकियों के प्रसार और अंगीकरण को बढ़ावा देने के लिए कुल 11 कृषि विज्ञान केंद्र कार्य कर रहे हैं।

पिछले तीन वर्षों के दौरान, इन कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा कुल 19,060 अग्रिम-पंक्ति प्रदर्शन (FLDs) लगाए गए, कृषिरत महिला एवं ग्रामीण युवा सहित कुल 62,711 किसान प्रशिक्षित किए गए, उन्नत खेत फसल किस्मों का 10,681.71 क्विंटल गुणवत्ता बीज उत्पादन किया गया और बागवानी फसलों की 25.37 लाख रोपण सामग्री का उत्पादन किया गया। इन हस्तक्षेपों के अंतर्गत जलवायु-अनुकूल एवं संरक्षित कृषि पद्धतियों, उन्नत किस्मों, एकीकृत पोषक तत्व/ नाशीजीव/ खरपतवार/ रोग प्रबंधन, फार्म यंत्रीकरण, पशुधन एवं मत्स्य पालन पर ध्यान केंद्रित किया गया।

गोरखपुर और देवीपाटन मंडल में कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से लागू की गईं प्रमुख भाकृअनुप-सहायता प्राप्त अनुसंधान एवं नवाचार परियोजनाओं का जिला-वार विवरण **अनुबंध-I** में प्रस्तुत है।

उपरोक्त के अलावा, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने अपने कृषि विज्ञान केंद्र नेटवर्क के माध्यम से उत्तर प्रदेश राज्य में निम्नलिखित अनुसंधान एवं नवाचार पहल में सहयोग किया है:

- जलवायु परिवर्तन में कृषि प्रणालियों की अनुकूलता बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय जलवायु-अनुकूल कृषि नवाचार (NICRA)।
- प्राकृतिक कृषि पर राष्ट्रीय मिशन (NMNF)/ टिकाऊ एवं कम निवेश वाली कृषि को बढ़ावा देने के लिए प्राकृतिक खेती प्रदर्शन।
- फसल विविधीकरण एवं एकीकृत कृषि प्रणालियां- फार्म आय और टिकाऊ क्षमता में सुधार करना।
- अग्रिम-पंक्ति प्रदर्शन (FLDs)- नई जारी की गईं फसल किस्मों और प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन करना।
- ऑन-फार्म परीक्षण (OFTs)- प्रौद्योगिकियों की स्थान-विशिष्ट उपयुक्तता का आकलन करना।
- मृदा स्वास्थ्य एवं संसाधन संरक्षण परियोजनाएं - मृदा उर्वरता और प्रभावी संसाधन उपयोग में सुधार लाना।
- किण्वित जैविक खाद (FOM) तथा तरल किण्वित जैविक खाद (LFOM)।
- संसाधन संरक्षण के लिए CRM (फसल अवशेष प्रबंधन)।
- राष्ट्रीय दलहन मिशन।
- राष्ट्रीय खाद्य तेल मिशन
- प्रशिक्षण एवं आदान वितरण कार्यक्रमों का आयोजन करना।

आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, में मसालों और औषधीय एवं सगंधीय पौधों तथा पान पर संचालित भाकृअनुप-अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना के अंतर्गत, हल्दी, अदरक और बीजीय मसालों की उन्नत उत्पादन

प्रौद्योगिकियों; एकीकृत फसल प्रबंधन; जैविक उत्पादन; गुणवत्ता रोपण सामग्री; मूल्य संवर्धन; कटाई-उपरांत प्रबंधन; तुलसी एवं अफीम पोस्ता (ऑपियम पॉपी) की संरक्षण प्रौद्योगिकियों के लिए उत्तर प्रदेश राज्य में मसाला आधारित एवं औषधीय पौधा आधारित कृषि प्रणालियों हेतु अनुसंधान, प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रमों को लागू किया गया।

भाकृअनुप-राष्ट्रीय जलवायु-अनुकूल कृषि नवाचार (ICAR-NICRA) के प्रौद्योगिकी प्रदर्शन घटक के अंतर्गत देशभर में स्थित जलवायु की दृष्टि से संवेदनशील कुल 151 जिलों में कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से स्थान-विशिष्ट जलवायु-अनुकूल प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया जा रहा है। उत्तर प्रदेश राज्य में इस कार्यक्रम को जलवायु की दृष्टि से संवेदनशील 17 जिलों में लागू किया गया है। जिला-वार विवरण **अनुबंध- II** में संलग्न है।

इसके अलावा, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने अपने फसल आधारित संस्थानों और राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) के माध्यम से वर्ष 2014-2025 की अवधि के दौरान उत्तर प्रदेश राज्य के लिए उपयुक्त कुल 749 खेत फसल किस्में विकसित की हैं। इनमें 18 किस्में बाढ़/जलमग्नता/जल भराव/गहरे जल के प्रति सहनशील हैं और 61 किस्में सूखा/नमी दबाव/जल दबाव के प्रति सहनशील तथा सीमित जल/कम वर्षा वाली परिस्थितियों के प्रति प्रतिरोधी हैं।

गुणवत्ता बीज की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए उत्तर प्रदेश राज्य में बीज (फसलों) पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना के अंतर्गत कार्यरत 09 केंद्रों ने पिछले तीन वर्षों के दौरान कुल 9,271.8 क्विंटल प्रजनक बीज का उत्पादन किया जबकि इसके लिए 5,038.5 क्विंटल की मांग की गई थी। साथ ही 84,880 क्विंटल गुणवत्ता बीज उत्पादन किया गया।

पिछले तीन वर्षों के दौरान जलवायु-अनुकूल खेत फसल किस्मों के लिए कुल 5297.2 क्विंटल प्रजनक बीज उत्पादन किया गया जबकि इसके लिए 4678.3 क्विंटल की मांग की गई थी। इसी अवधि के दौरान जलवायु-अनुकूल खेत फसल किस्मों का कुल 12017.4 क्विंटल गुणवत्ता बीज उत्पादन करके उसे किसानों में वितरित किया गया।

(ख) : भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) ने अपने संस्थानों, अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाओं (AICRPs) और कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से गोरखपुर एवं देवीपाटन मंडल सहित उत्तर प्रदेश की कृषि जलवायु परिस्थितियों के लिए उपयुक्त अनेक स्थान-विशिष्ट प्रौद्योगिकियां विकसित की हैं, इन्हें प्रमाणित किया है और प्रोत्साहित किया है। किसानों द्वारा अपनाए जाने के लिए इनका विस्तार करने से पहले इन प्रौद्योगिकियों का मूल्यांकन ऑन-फार्म परीक्षण (OFTs) तथा अग्रिम-पंक्ति प्रदर्शनों (FLDs) के अंतर्गत प्रदर्शन करके किया जाता है। प्रमाणित एवं प्रोत्साहित की गईं प्रमुख प्रौद्योगिकियों का विवरण **अनुबंध-III** पर प्रस्तुत है।

(ग) : उत्पादकता, जलवायु-अनुकूलता तथा विविधीकरण पर प्रभाव को निम्नलिखित बिंदुओं के रूप में पाया गया है :

- किस्म सांबा सब-1 में स्वर्णा सब-1 की तुलना में 25-30% उच्चतर उपज, 30% से 60% उच्चतर लाभप्रदता है और यह किस्म 15 दिनों तक जलमग्नता परिस्थितियों में बनी रह सकती है।
- एनडीआर 2064 चावल किस्म : 16 % उच्चतर उपज, एनडीआर 2065 चावल किस्में : पारंपरिक किस्मों की तुलना में 45% अधिक उपज।
- धान की सीधी बीजाई प्रौद्योगिकी : 22% की उत्पादकता बढ़ोतरी और 50-60% की लाभप्रदता बढ़ोतरी।
- गेहूं के स्थान पर सरसों और मसूर की खेती अपनाकर फसल विविधीकरण : वर्तमान धान-गेहूं फसलचक्र प्रणाली की तुलना में प्रति हेक्टेयर क्रमशः ₹45,675 और ₹42,693 अधिक शुद्ध आय प्राप्त हुई तथा 30-40% अधिक लाभप्रदता दर्ज की गई।
- धान-गेहूं फसलचक्र प्रणाली का विविधीकरण : धान-गेहूं प्रणाली के स्थान पर मूली-आलू-लोबिया अथवा मूली-हरी मटर-भिंडी फसलचक्र अपनाया गया। सितंबर में खेत से पानी निकलने के बाद मूली की बुवाई की गई। इसके अतिरिक्त, धान की परती भूमि में तोरिया की खेती भी शुरू की गई।
- गेहूं की शून्य जुताई करने पर उत्पादकता में 11-15% तक बढ़ोतरी हुई।
- गन्ना में ट्रैश मल्चिंग : 11-20% तक उत्पादकता वृद्धि।
- उठी हुई क्यारियों में रोपाई : 30-35% तक उत्पादकता में वृद्धि।
- उन्नत किस्मों, वैज्ञानिक उत्पादन तकनीकों तथा समेकित पोषक तत्व एवं नाशीजीव प्रबंधन को अपनाकर फसलों और पशुधन की उत्पादकता में वृद्धि की गई।
- उच्चतर निवेश उपयोग प्रभावशीलता (जल, उर्वरक, आहार एवं श्रम)।
- प्रभावी यंत्रीकरण और संसाधन प्रबंधन के माध्यम से उत्पादन लागत में कमी की गई।
- गोरखपुर मंडल के कुशीनगर में किसान के खेत में सुपर सीडर के माध्यम से उपज में 13% वृद्धि।
- गोरखपुर मंडल के कुशीनगर में किसान के खेत में मेड क्यारी बुवाई के माध्यम से उपज में 43% वृद्धि।
- गोरखपुर मंडल के कुशीनगर में पशुधन हस्तक्षेपों के माध्यम से दुग्ध उपज में 21-26% वृद्धि।

कृषि में युवाओं को आकर्षित करना एवं बनाए रखना (ARYA):

गोरखपुर मंडल के देवरिया और कुशीनगर के कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से ग्रामीण युवाओं द्वारा कृषि-आधारित उद्यम अपनाने से उनकी आय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। मशरूम उत्पादन से औसतन ₹22,000-26,000, मधुमक्खी पालन से ₹12,000-15,000, व्यावसायिक बकरी पालन से ₹34,000-38,000 तथा कुक्कुट पालन से ₹14,000-15,000 की औसत मासिक आय प्राप्त हुई।

प्राकृतिक खेती : गोरखपुर मंडल के देवरिया और कुशीनगर के कृषि विज्ञान केंद्रों में प्राकृतिक खेती अपनाने पर कृषि आदानों की लागत में लगभग 30% की कमी आई तथा बेहतर गुणवत्ता वाली, रसायन-मुक्त कृषि उपज का उत्पादन संभव हुआ।

तिलहन एवं दलहन पर क्लस्टर अग्रिम-पंक्ति प्रदर्शन (CFLDs) : गोरखपुर मंडल के देवरिया और कुशीनगर के कृषि विज्ञान केंद्रों में उन्नत किस्मों और संस्तुत उत्पादन प्रौद्योगिकियों को अपनाने पर फसल उपज में 15-18% तक वृद्धि हुई।

राष्ट्रीय विस्तार कार्यक्रम (NEP) : गोरखपुर मंडल के देवरिया कृषि विज्ञान केंद्र में उन्नत फसल किस्मों और उत्पादन प्रौद्योगिकियों के प्रदर्शन के परिणामस्वरूप फसल उपज में 12-16% तक वृद्धि हुई।

कृषि यंत्रीकरण : उन्नत कृषि यंत्रीकरण तकनीकों को अपनाने से फसल उपज में 13-20% की वृद्धि, फसल सघनता में 5-20% की बढ़ोतरी तथा श्रम की आवश्यकता में 20-25% की कमी दर्ज की गई।

(घ) : जी, हॉ ।

(ङ) : पिछले तीन वर्षों के दौरान इन मंडलों के लिए वित्तीय सहायता एवं संस्थागत सुदृढ़ीकरण का विवरण **अनुबंध-IV** में प्रस्तुत है।

****

अनुबंध - I

{राज्य सभा के दिनांक 07.08.2026 के अतारांकित प्रश्न सं. 2274 का भाग (क)}

गोरखपुर एवं देवीपाटन मंडल में कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से क्रियान्वित प्रमुख भाकृअनुप- सहायता प्राप्त अनुसंधान एवं नवाचार परियोजनाओं का जिला-वार विवरण :

जिला	कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से क्रियान्वित प्रमुख भाकृअनुप- सहायता प्राप्त अनुसंधान एवं नवाचार कार्यक्रम
गोरखपुर	राष्ट्रीय जलवायु-अनुकूल कृषि नवाचार (NICRA); प्राकृतिक कृषि पर राष्ट्रीय मिशन (NMNF); दलहन एवं तिलहन पर क्लस्टर अग्रिम-पंक्ति प्रदर्शन (CFLDs); पोषण संवेदी कृषि संसाधन एवं नवाचार (NARI)
देवरिया	प्राकृतिक कृषि पर राष्ट्रीय मिशन (NMNF); दलहन एवं तिलहन पर क्लस्टर अग्रिम-पंक्ति प्रदर्शन (CFLDs); दलहन एवं तिलहन बीज हब कार्यक्रम
कुशीनगर	राष्ट्रीय जलवायु-अनुकूल कृषि नवाचार (NICRA); प्राकृतिक कृषि पर राष्ट्रीय मिशन (NMNF); दलहन एवं तिलहन पर क्लस्टर अग्रिम-पंक्ति प्रदर्शन (CFLDs); पोषण संवेदी कृषि संसाधन एवं नवाचार (NARI)
महाराजगंज	प्राकृतिक कृषि पर राष्ट्रीय मिशन (NMNF); दलहन एवं तिलहन पर क्लस्टर अग्रिम-पंक्ति प्रदर्शन (CFLDs);
गोण्डा	प्राकृतिक कृषि पर राष्ट्रीय मिशन (NMNF); दलहन एवं तिलहन पर क्लस्टर अग्रिम-पंक्ति प्रदर्शन (CFLDs); पोषण संवेदी कृषि संसाधन एवं नवाचार (NARI)
बहराइच	राष्ट्रीय जलवायु-अनुकूल कृषि नवाचार (NICRA); प्राकृतिक कृषि पर राष्ट्रीय मिशन (NMNF); दलहन एवं तिलहन पर क्लस्टर अग्रिम-पंक्ति प्रदर्शन (CFLDs); पोषण संवेदी कृषि संसाधन एवं नवाचार (NARI)
बलरामपुर	राष्ट्रीय जलवायु-अनुकूल कृषि नवाचार (NICRA); प्राकृतिक कृषि पर राष्ट्रीय मिशन (NMNF); दलहन एवं तिलहन पर क्लस्टर अग्रिम-पंक्ति प्रदर्शन (CFLDs)
श्रावस्ती	प्राकृतिक कृषि पर राष्ट्रीय मिशन (NMNF); दलहन एवं तिलहन पर क्लस्टर अग्रिम-पंक्ति प्रदर्शन (CFLDs)

इसके अलावा, जिला कृषि मौसम इकाइयां(DAMUs)/ग्रामीण कृषि मौसम सेवा(GKMS), राष्ट्रीय विस्तार कार्यक्रम (NEP), कृषि ड्रोन प्रदर्शन, अनुसूचित जाति उप-योजना (SCSP), ऑन-फार्म परीक्षण (OFTs), अग्रिम-पंक्ति प्रदर्शन (FLDs), किसान क्षमता निर्माण कार्यक्रमों और प्रौद्योगिकी विस्तार गतिविधियों को गोरखपुर एवं देवीपाटन मंडल सहित उत्तर प्रदेश में चयनित कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से लागू किया गया है।

अनुबंध- II

{राज्य सभा के दिनांक 07.08.2026 के अतारांकित प्रश्न सं. 2274 का भाग (क)}

निक्रा के प्रौद्योगिकी प्रदर्शन घटक के अंतर्गत जलवायु की दृष्टि से संवेदनशील 17 जिलों की सूची

राज्य	जिला	जोखिम	संवेदनशीलता
उत्तर प्रदेश	जालौन	अति उच्च	अत्यधिक सूखा-प्रवण क्षेत्र
	झांसी	अति उच्च	ताप एवं सूखा
	हमीरपुर	अति उच्च	अत्यधिक सूखा-प्रवण क्षेत्र
	चित्रकूट	अति उच्च	ताप एवं सूखा
	बांदा	अति उच्च	अत्यधिक सूखा-प्रवण क्षेत्र
	भदोई	अति उच्च	ताप एवं सूखा
	बहराइच	अति उच्च	अत्यधिक बाढ़
	बस्ती	अति उच्च	अत्यधिक सूखा-प्रवण क्षेत्र
	बागपत	अति उच्च	अत्यधिक सूखा-प्रवण क्षेत्र
	सोनभद्र	उच्च	ताप एवं सूखा
	कौशाम्बी	अति उच्च	अत्यधिक सूखा-प्रवण क्षेत्र/ सोडासिटी
	प्रतापगढ़	उच्च	अत्यधिक सूखा-प्रवण क्षेत्र/ सोडासिटी
	कानपुर देहात	अति उच्च	अत्यधिक सूखा-प्रवण क्षेत्र/ सोडासिटी
	गोण्डा	अति उच्च	अत्यधिक सूखा-प्रवण क्षेत्र
	कुशीनगर	उच्च	अत्यधिक सूखा-प्रवण क्षेत्र
	गोरखपुर	उच्च	अत्यधिक सूखा-प्रवण क्षेत्र
	महाराजगंज	उच्च	अत्यधिक सूखा-प्रवण क्षेत्र

अनुबंध-III

{राज्य सभा के दिनांक 07.08.2026 के अतारांकित प्रश्न सं. 2274 का भाग (ख)}

स्थानीय कृषि जलवायु परिस्थितियों के लिए प्रमाणित एवं विस्तारित की गईं प्रौद्योगिकियां :

(i) राष्ट्रीय जलवायु-अनुकूल कृषि नवाचार (NICRA) के अंतर्गत प्रमाणित प्रौद्योगिकियां :

- एकसमान सिंचाई जल प्रयोग तथा उन्नत जल उपयोग प्रभावशीलता के लिए लेज़र भूमि लेवलिंग।
- वर्षा जल संचयन, पूरक सिंचाई, भूजल पुनर्भरण तथा बाढ़ के पानी की निकासी के लिए चेक डैमों का निर्माण, जल निकासी नालों से गाद हटाना तथा खुले कुओं का भूजल पुनर्भरण किया गया।
- संचित वर्षा जल के कुशल उपयोग तथा जल उत्पादकता बढ़ाने के लिए सूक्ष्म सिंचाई प्रणालियों को अपनाया गया।
- बाढ़ से होने वाले नुकसान को कम करने के लिए जलभराव सहनशील धान की किस्में (सांबा सब-1 एवं स्वर्णा सब-1) तथा जलभराव सहनशील किस्मों के साथ धान की सीधी बीजाई (डीएसआर) तकनीक को अपनाया गया।
- सूखा-प्रवण क्षेत्रों तथा मानसून में देरी की स्थिति के लिए कम अवधि में पकने वाली सूखा-सहनशील धान की किस्में (सहभागी धान, शुष्क सम्राट, एनडीआर-97, एनडीआर-2064, एनडीआर-2065 एवं एनडीआर-3112) अपनाई गईं।
- मृदा स्वास्थ्य में सुधार तथा अगली फसल की समय पर बुवाई सुनिश्चित करने के लिए धान के फसल अवशेषों का खेत में ही (*स्व:स्थाने*) प्रबंधन एवं मिट्टी में समावेशन किया गया।
- समय पर बुवाई सुनिश्चित करने तथा ताप दबाव के प्रभाव को कम करने के लिए ताप सहनशील गेहूं की किस्मों (एचडी-2967, एचडी-3059, एचडी-3086, डीबीडब्ल्यू-173, डीबीडब्ल्यू-187, राज-4120, पीबीडब्ल्यू-373, के-7903, आरएच-749, के-9533 एवं के-9162) के साथ शून्य जुताई तकनीक अपनाई गई।
- सोडिक एवं लवण-प्रभावित मृदाओं के लिए लवण-सहनशील धान की किस्में (सीएसआर-36, सीएसआर-43 एवं सीएसआर-46) अपनाई गईं।
- लवण-प्रभावित क्षेत्रों में उत्पादकता बढ़ाने के लिए लवण-सहनशील गेहूं की किस्में (केआरएल-210 एवं केआरएल-213), जौ की किस्म (एनडीबी-943) तथा सरसों की किस्में (सीएस-58 एवं सीएस-60) अपनाई गईं।
- सोडिक मृदाओं के सुधार के लिए सीएसआर-बायो, हेलो एजो, हेलो पीएसबी कल्चर तथा जिप्सम का प्रयोग किया गया।
- किसानों की आय बढ़ाने तथा फसल प्रणाली की स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए उच्च मूल्य वाली सब्जियों, तिलहनी एवं दलहनी फसलों के माध्यम से फसल विविधीकरण को बढ़ावा दिया गया।
- सूखा-सहनशील तथा कम अवधि में तैयार होने वाली दलहनी एवं तिलहनी फसलों की निम्नलिखित किस्में अपनाई गईं :
    - ❖ चना (जेजी-14, जीएनजी-1581, केजीडी-1168, केडब्ल्यूआर-108)

- ❖ अरहर (एनए-1, एनए-2, एनडीए-2 एवं एनडीए-3)
- ❖ उड़द (आजाद उड़द-2, आजाद उड़द-3 एवं शेखर-2)
- ❖ मूंग (एसएमएल-668, आईपीएम-2-3, पीडीएम-139 एवं सम्राट)
- ❖ तिल (शेखर एवं प्रगति)
- ❖ मसूर (डीपीएल-62, केएलबी-320, के-75, एनडीएल-1, पीएल-5 एवं पीएल-8)
- ❖ सरसों (रोहणी, वरूणा एवं पीएम-26)

- फसलचक्र सघनीकरण तथा बढ़ी हुई प्रणाली उत्पादकता के लिए अंतर-फसलचक्र प्रणालियां (गन्ना + गेहूं, गन्ना + सरसों, तथा गन्ना + आलू)।
- वर्षभर चारा उपलब्धता के लिए बारहमासी और मौसमी चारा किस्मों का उपयोग करते हुए उन्नत चारा उत्पादन प्रणालियां। इन किस्मों में शामिल हैं : हाइब्रिड नेपियर (एनबी-21), मक्खन ग्रास (एनएस-07), बरसीम (वरदान), ज्वार (एचसी-136), लोबिया (बीएल-2), जई (जेएचओ-822), तथा मक्का (अफ्रीकन टॉल)।
- पशुधन सुधार एवं जलवायु-अनुकूल प्रबंधन के अंतर्गत सिरोही एवं जखराना नस्ल की बकरियों का नस्ल उन्नयन, कृमिनाशन के बाद क्षेत्र-विशिष्ट खनिज मिश्रण का पूरक आहार तथा गर्मी के दबाव को कम करने और दूध एवं मांस उत्पादन बढ़ाने के लिए उन्नत पशु आवास अपनाए गए।
- आजीविका के विविधीकरण एवं किसानों की आय बढ़ाने के लिए संचित वर्षा जल का उपयोग करते हुए मछली पालन (ग्रास कार्प, कटला, रोहू एवं मृगाल) को बढ़ावा दिया गया।
- आजीविका को अधिक लचीला बनाने तथा आय के स्रोतों में विविधता लाने के लिए अहाता कुक्कुट पालन (बैकयार्ड पोल्ट्री) एवं अन्य एकीकृत कृषि उद्यमों को अपनाया गया।

(ii) भाकृअनुप - भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान (IIVR), वाराणसी तथा सब्जी फसलों पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियां :

- गोरखपुर मंडल के चयनित कृषि विज्ञान केंद्रों में लगभग 510 हेक्टेयर क्षेत्र में धान की सीधी बीजाई (डीएसआर), गेहूं की शून्य जुताई से बुवाई, रिज-बेड बुवाई, हरी खाद का उपयोग तथा सुपर सीडर से बुवाई जैसी उन्नत कृषि तकनीकों को अपनाया गया।
- फसल उत्पादन एवं विविधीकरण : गोरखपुर मंडल के चयनित कृषि विज्ञान केंद्रों में लगभग 835 हेक्टेयर क्षेत्र में भाकृअनुप -भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी द्वारा विकसित बाढ़ एवं अंतस्थ ताप दबाव, कम अवधि वाली, प्रतिरोधी एवं उन्नत सब्जी किस्मों (जैसे लोबिया, मटर, मूली, पालक, टमाटर आदि) का प्रसार एवं उपयोग किया गया।
- पशुपालन : गोरखपुर मंडल के चयनित कृषि विज्ञान केंद्रों में लगभग 700 पशुपालकों द्वारा कृमिनाशन, खनिज मिश्रण का पूरक आहार, हरे चारे की उन्नत किस्मों तथा बारबरी नस्ल की उन्नत बकरियों को अपनाया गया।
- दुधारू पशुओं में रीपीट ब्रीडिंग की समस्या का प्रबंधन : गोरखपुर मंडल के चयनित कृषि विज्ञान केंद्रों में लगभग 300 मामलों में यह तकनीक अपनाई गई।
- दुधारू पशुओं में प्रसव के आसपास होने वाली समस्याओं (पेरी-पार्ट्यूरिएंट समस्याओं) का प्रबंधन: गोरखपुर मंडल के देवरिया कृषि विज्ञान केंद्र में लगभग 150 पशुओं पर इसका सफलतापूर्वक क्रियान्वयन किया गया।

- गोरखपुर मंडल के चयनित कृषि विज्ञान केंद्रों में 600 हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में सब्जी आधारित फसल प्रणाली (चावल-आलू-बसंत मौसम की सब्जियां) को बढ़ावा दिया गया।
- पोषण वाटिका की स्थापना, गोरखपुर मंडल के देवरिया एवं कुशीनगर कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से उच्च उपज देने वाली एवं पोषक तत्वों से भरपूर सब्जियों पर आधारित सुनियोजित पोषण वाटिकाओं की स्थापना कर खाद्य एवं पोषण सुरक्षा को बढ़ावा दिया गया। इस पहल के अंतर्गत लगभग 150 पोषण वाटिकाएं स्थापित की गईं।

(iii) कृषि में युवाओं को आकर्षित करना एवं बनाए रखना (ARYA) कार्यक्रम के अंतर्गत प्रोत्साहित प्रौद्योगिकियां :

- मशरूम उत्पादन : गोरखपुर मंडल के देवरिया एवं कुशीनगर कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से 78 कृषि उद्यमी विकसित किए गए।
- मधुमक्खी पालन (एपीकल्चर) : गोरखपुर मंडल के देवरिया एवं कुशीनगर कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से 56 कृषि उद्यमी विकसित किए गए।
- व्यावसायिक बकरी पालन : गोरखपुर मंडल के देवरिया एवं कुशीनगर कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से 112 कृषि उद्यमी विकसित किए गए।
- व्यावसायिक कुक्कुट पालन : गोरखपुर मंडल के देवरिया एवं कुशीनगर कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से 32 कृषि उद्यमी विकसित किए गए।

(iv) प्राकृतिक खेती के तहत प्रदर्शित प्रौद्योगिकियां :

गोरखपुर और देवीपाटन मंडल में चयनित कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा किसानों के खेतों पर 3 तथा कृषि विज्ञान केंद्र में एक प्रदर्शन इकाई विकसित की गई।

(v) क्लस्टर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों (CFLDs) के तहत प्रदर्शित प्रौद्योगिकियां :

गोरखपुर मंडल के देवरिया एवं कुशीनगर में तिलहनी फसलों पर 300 हेक्टेयर तथा दलहनी फसलों पर 100 हेक्टेयर क्षेत्र में उन्नत/जलवायु-अनुकूल किस्मों एवं बेहतर कृषि पद्धतियों के साथ अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (सीएफएलडी) आयोजित किए गए।

(vi) राष्ट्रीय विस्तार कार्यक्रम (NEP) के अंतर्गत विकसित प्रौद्योगिकियां :

गोरखपुर मंडल के किसानों के बीच धान की जलवायु-अनुकूल किस्मों (पूसा-2090 एवं पूसा-1824), गेहूं की उच्च उपज देने वाली किस्मों (एचडी-3406 एवं एचडी-3271) तथा सरसों की जैव-प्रबलित (बायोफोर्टिफाइड) किस्म (पूसा सरसों-32) का प्रदर्शन किया गया।

(vii) औषधीय एवं सगंधीय पौधों तथा पान पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना के तहत विकसित प्रौद्योगिकियां :

- मीठी तुलसी में *अल्टरनेरिया* पत्ती धब्बा तथा मृदाजनित रोग (*मैक्रोफोमिना फेजियोलिना*) के प्रभावी प्रबंधन के लिए एक तकनीक विकसित की गई।
- अफीम पोस्ता में डाउनी मिल्ड्यू तथा कॉलर रॉट रोग के प्रबंधन के लिए समेकित रोग प्रबंधन (आईडीएम) मॉड्यूल विकसित किया गया।
- अफीम पोस्ता में पत्ती धब्बा रोग के प्रभावी प्रबंधन के लिए एक तकनीक विकसित की गई।

- एलोवेरा एवं तुलसी में रोगों के प्रभावी नियंत्रण के लिए समेकित रोग प्रबंधन (आईडीएम) मॉड्यूल विकसित किए गए।

(viii) मसालों पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना के तहत विकसित प्रौद्योगिकियां :

- उन्नत हल्दी किस्में (नरेंद्र हल्दी -4 एवं नरेंद्र हल्दी-5)
- हल्दी एवं धनिया फसल में बेहतर कृषि पद्धतियां (GAP) ; फसलचक्र प्रणाली अनुसंधान (सौंफ-सब्जी अंतर-फसलचक्र)
- जल प्रभावी प्रौद्योगिकियां सौंफ एवं मेथी में-सूक्ष्म सिंचाई एवं उर्वरीकरण, सूक्ष्म पोषक तत्व प्रबंधन
- जैव-इनपुट, हल्दी के लिए पादप बढ़वार प्रोत्साहक राइजोबैक्टिरिया (PGPR) सहित

(ix) कृषि विज्ञान केन्द्र प्रणाली के माध्यम से प्रमाणित की गईं प्रौद्योगिकियां :

- उच्च उपजशील एवं जलवायु-अनुकूल फसल किस्में।
- फसल विविधीकरण एवं अंतर-फसलचक्र प्रणाली
- एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन (INM), एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन (IPM) तथा एकीकृत खरपतवार प्रबंधन (IWM)
- मृदा परीक्षण आधारित उर्वरक संस्तुति एवं संरक्षित कृषि (पलवार एवं नमी संरक्षण)
- वैज्ञानिक डेयरी प्रबंधन, चारा उत्पादन एवं संरक्षण, कृत्रिम गर्भाधान, संतुलित फीडिंग, कृमिनाशन एवं टीकाकरण
- बकरी, भेड़, अहाता (बैक्यार्ड) कुक्कुट पालन एवं शूकर पालन का वैज्ञानिक प्रबंधन

(x) फार्म उपकरणों एवं मशीनरी पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना के तहत विकसित की गई फार्म यंत्रीकरण प्रौद्योगिकियां :

- धान की कटाई के बाद गेहूं की बुवाई के लिए जीरो टिल सीड ड्रिल।
- फसल अवशेष प्रबंधन के लिए हैप्पी सीडर, स्मार्ट सीडर तथा सुपर सीडर।
- रेज्ड बेड प्लांटर (ऊँची क्यारी पर बुवाई करने वाला यंत्र)।
- बहु-फसली बीज एवं उर्वरक ड्रिल (मल्टी-क्रॉप सीड-कम-फर्टिलाइज़र ड्रिल)।
- धान की सीधी बीजाई (डीएसआर) सीड ड्रिल।
- पावर वीडर एवं कोनो वीडर।
- लेजर लैंड लेवलर।
- मक्का एवं दलहनी फसलों की सटीक बुवाई के लिए प्रिसिजन प्लांटर।
- रीपर, रीपर-बाइंडर तथा बहु-फसली थ्रेसर।
- फसल अवशेष प्रबंधन के लिए स्ट्रॉ रीपर, मल्चर तथा श्रेडर जैसे कृषि यंत्र।
- सीमांत एवं लघु किसानों के लिए छोटे कृषि यंत्रीकरण उपकरण।
- गन्ने की खेती के लिए उपयुक्त मशीनरी

अनुबंध-IV

{राज्य सभा के दिनांक 07.08.2026 के अतारांकित प्रश्न सं. 2274 का भाग (ङ)}

पिछले तीन वर्षों के दौरान वित्तीय सहायता एवं संस्थागत सुदृढ़ीकरण का विवरण

कृषि विज्ञान केंद्र	2023-24		2024-25		2025-26	
	जारी	व्यय	जारी	व्यय	जारी	व्यय
अटारी कानपुर	11,13,050	11,02,972	9,99,000	9,99,000	5,70,000	5,58,114
बागपत	9,28,000	9,26,653	11,30,000	11,26,483	10,95,000	7,00,820
बहराइच (देवीपाटन)	9,28,000	8,68,178	13,66,000	12,45,179	9,35,000	6,74,779
चित्रकूट	13,28,000	13,22,048	29,74,500	29,01,257	12,46,500	12,56,084
गोण्डा (देवीपाटन)	11,28,000	11,28,000	23,80,000	23,80,000	14,88,000	14,88,000
गोरखपुर	9,28,000	8,97,886	11,70,000	11,47,317	9,95,000	7,37,960
हमीरपुर उत्तर प्रदेश	9,28,000	9,27,426	14,28,000	12,94,329	9,80,000	9,71,637
झांसी	10,28,000	10,28,000	15,86,000	14,75,253	9,51,500	9,49,406
कुशीनगर	9,28,000	8,80,899	12,41,000	10,27,201	8,10,000	8,58,014
महाराजगंज	9,28,000	9,24,116	12,06,000	11,36,632	9,85,000	9,30,711
प्रतापगढ़	11,28,000	11,28,000	29,44,000	29,44,000	16,65,000	16,65,000
बांदा	9,28,000	9,22,116	14,83,000	14,70,967	11,05,000	10,77,023
संत रवीदास नगर	9,28,000	6,90,819	6,68,000	6,63,376	7,60,000	7,55,452
बस्ती	9,29,000	9,07,910	14,32,000	11,05,833	9,97,500	9,67,964
जालौन	9,29,000	9,28,372	11,95,000	11,53,751	11,85,000	11,68,148
कानपुर देहात (ग्रामीण)	9,29,000	9,28,108	11,16,000	10,79,016	11,81,500	11,15,440
कौशाम्बी	26,00,000	26,00,000	19,28,000	19,28,000	13,50,000	13,49,990
सोनभद्र	22,00,000	15,04,490	6,82,000	4,99,092	7,00,000	5,18,615
	2,07,36,050	**1,96,15,993**	**2,69,28,500**	**2,55,76,686**	**1,90,00,000**	**1,77,43,157**

****